(जुलाई–दिसम्बर 2020 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, तृतीय सेमेस्टर

MHL-E316

प्रयोजन मूलक हिन्दी

पूर्णांक 100 | लिखित परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट 6 | सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम :

इकाई–1 **हिन्दी के विभिन्न रूप**

सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राज भाषा, माध्यम भाषा, मातृभाषा।

कार्यालयी हिन्दी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य – प्रारूपण, पत्र लेखन, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पण।

पारिभाषिक शब्दावली : स्वरूप एवं महत्त्व, पारिभाषिक शब्दावली–निर्माण के सिद्धान्त।

ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली का संक्षिप्त/सामान्य परिचय।

कम्प्यूटर : सामान्य परिचय, रूपरेखा, उपयोग, क्षेत्र तथा कम्प्यूटर की विशेषताएँ, इंटरनेट सम्पर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख–रखाव एवं इंटरनेट समय मितव्ययिता के सूत्र।

इकाई–2 **पत्रकारिता** : स्वरूप एवं विभिन्न प्रकार। हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास। समाचार लेखन कला। सम्पादन के आधारभूत तत्त्व। व्यावहारिक प्रूफ शोधन। शीर्षक की संरचना, शीर्षक सम्पादन। सम्पादकीय लेखन। प्रमुख प्रेस कानून एवं आचार संहिता।

इकाई–3 **जनसंचार** : प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियाँ। विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप – मुद्रण, श्रव्य, दृश्य–श्रव्य, इंटरनेट। मौखिक भाषा की प्रकृति। समाचार लेखन एवं वाचन। उद्घोषणा लेखन। विज्ञापन लेखन। फीचर।

इकाई–4 **दृश्य – श्रव्य माध्यम** (फिल्म, टेलीविजनएवं वीडियो)

दृश्य माध्यमों में भाषा की प्रकृति। दृश्य एवं श्रव्य सामग्री का सामंजस्य। पटकथा लेखन। संवाद लेखन। साहित्य की विधाओं का दृश्य माध्यमों में रूपांतरण। विज्ञापन की भाषा।

इंटरनेट : सामग्री सृजन

इकाई–5 **अनुवाद** – अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि। अनुवाद के प्रकार, हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका। कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद। वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अनुवाद का महत्त्व। साहित्यिक अनुवाद के सिद्धान्त एवं व्यवहार।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – सम्पादक रविन्द्रनाथ प्रसाद, के०हि० संस्थान
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ० नरेश मिश्र, राजपाल एण्ड संस कश्मीरी गेट, दिल्ली
3. प्रारूपण, टिप्पण और प्रूफ पठन – भोलानाथ तिवारी
4. कम्प्यूटर और हिन्दी – डॉ० हरिमोहन
5. प्रशासनिक हिन्दी : टिप्पण प्रारूपण एवं पत्र लेखन – हरिमोहन
6. प्रयोजन मूलक हिन्दी और उसका अनुप्रयोग – डॉ० ज्ञान चन्द रावल